

साग्रान्य हेन्दी

कारक

(1)

"संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध क्रिया और दूसरे शब्दों के साथ सूचित किया जाता है, वह "कारक" कहलाता है।
⇒ हिन्दी में मुख्यतः आठ कारक होते हैं जिनका विवरण निम्नवत् है:-

① कर्ता कारक: ("ने") → संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का बोध हो उसे "कर्ता" कारक कहते हैं।
* गीता नृत्य कर रही है। ⇒ गीता "कर्ता कारक" परसर्ग-सहित।
* राम ने धनुष पर बाण चढ़ाया। ⇒ "राम ने" कर्ता कारक परसर्ग-सहित।

② कर्म कारक: ("को") → जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का फल पड़े।
* रावण को राम ने मारा। कर्मकारक - रावण
* अरुण पुस्तक पढ़ता है। कर्मकारक - पुस्तक

③ करण कारक: ("से") कर्ता जिस साधन या उपकरण से क्रिया सम्पन्न करता है, उसे करण कारक कहते हैं।
* माली खुरपी से घास खोंद रहा है। (खुरपी)
* मैं रेल से आया हूँ। (रेल)

④ सम्प्रदान कारक: ("के लिए, से") - जिसके लिए क्रिया की जाय, उसका बोध कराने वाला शब्द "सम्प्रदान कारक" कहते हैं।
* बच्चों के लिए दूध लाओ। (बच्चों के लिए)
* मैं पूजा के लिए फूल लाया हूँ। (पूजा के लिए)

⑤ अपादान कारक: संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे पृथक्ता (अलग होना) का बोध हो।
[से (अलग होना)]
* अतुल ने डाल से फूल तोड़ा। (डाल से।)
* पतंग बच्चे के हाथ से छूट गई। (हाथ से।)

⑥ सम्बन्ध कारक: संज्ञा व सर्वनाम का रूप जिससे वाक्य में आये हुए अन्य व्यक्ति या वस्तु से उसके सम्बन्ध का बोध हो।
(का, की, के)
* यह रमेश का घर है। (रमेश का)
* यह उसकी पुस्तक है। (उस की)

⑦ अधिकरण कारक: (में, पर) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के स्थान का बोध हो।

* गिलास में पानी है।

* पुस्तक मेज पर रखी है।

⑧ सम्बोधन कारक: (हे, ओ, अरे) संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी को पुकारने का ज्ञान हो।

* हे प्रभो! सभी का भला करी।

* अरे रमेश! कहा जा रहे हो।

— निम्न में कारक बताइये? (Home Work)

① खिलौना मेज पर रखा है। _____

② हे राम! कितना अन्धेयर है। _____

③ पेन से ब्यू नहीं लिखते? _____

④ कृष्ण ने राम को सारी बात बता दी है। _____

⑤ उसने पेड़ से फल तोड़े हैं। _____

⑥ अरे मित्र! यह क्या हो रहा है। _____

⑦ पथिक पेड़ की दाया में सो गया है। _____

⑧ पुस्तक मेज पर रख दो। _____

⑨ रमेश ने चाय पी ली है। _____

⑩ वह मेरा मित्र है। _____

स्वर संधि

व्यंजन संधि

विसर्ग संधि

- (i) दीर्घ सन्धि
- (ii) यण सन्धि
- (iii) झयादि सन्धि
- (iv) वृद्धि सन्धि
- (v) गुण सन्धि
- (vi) पूर्व रूप सन्धि

(i) दीर्घ सन्धि: लघु या दीर्घ ~~अ~~ अ, इ, उ, ऋ के बाद लघु या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ आने पर दोनों के स्थान पर दीर्घ स्वर हो जाता है।

अ + अ = आ → देव + अधिपति = देवाधिपति

अ + आ = आ → हिम + आलय = हिमालय

आ + अ = आ → युवा + अवस्था = युवावस्था

आ + आ = आ → महा + आशय = महाशय

इ + इ = ई → कवि + ईश = कवीश

इ + ई = ई → अभि + इष्ट = अभीष्ट

ई + इ = ई → जानकी + ईश = जानकीश

ई + ई = ई → लक्ष्मी + इच्छा = लक्ष्मीच्छा

उ + ऊ = ऊ → सिन्धु + उर्मि = सिन्धुर्मि

ऊ + उ = ऊ → वधू + उर्मि = वधूर्मि

ऋ + ऋ = ऋ → पितृ + ऋण = पितृण

(ii) यण सन्धि: लघु या दीर्घ इ, उ, ऋ के उपरांत कोई असमान स्वर आये तो ई, उ, ऋ के स्थान पर क्रमशः य, र, व हो जायेगा

इ + अ = य → यदि + अपि = यद्यपि

ई + अ = य → देवी + अर्पण = देव्यर्पण

इ + आ = या → अति + आचार = अत्याचार

ई + आ = या → देवी + आलय = देव्यालय

इ + उ = यु → प्रति + उपकार = प्रत्युपकार

इ + ऊ = यू → प्रति + ऊष = प्रत्यूष

ई + ऊ = यू → वाणी + उर्मि = वाण्युर्मि

ऊ + इ = वी → वधू + इच्छा = वध्वीच्छा

उ + अ = व → अनु + अय = अन्वय

ऊ + अ = व → वधू + अर्थ = वध्वर्थ

उ + आ = वा → मधु + आलय = मध्वालय

ऊ + आ = वा → वधू + आगमन = वध्वागमन

ऋ + अ = र → मातृ + अर्थ = मातार्थ

ऋ + आ = रा → पितृ + आलय = पितृालय

(3) अयादि सन्धि: जब ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भी स्वर आये तो, (2)

$\downarrow \quad \downarrow \quad \downarrow \quad \downarrow$
 अय्य् आय्य् अव्य् आव्य्

ए + अ = अय्य् → ने + अन = नयन

ऐ + अ = आय्य् → नै + अक = नायक

ओ + अ = अव्य् → भो + अन = भवन

औ + अ = आव्य् → पौ + अक = पावक

(4) वृद्धि सन्धि: जब लघु या दीर्घ 'अ' के बाद ए, ऐ, ओ, औ आए तो
 ए → ऐ, ऐ → ओ, औ → औ हो जाते हैं।

अ + ए = ऐ → परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य

आ + ए = ऐ → तथा + एव = तथैव

आ + ऐ = ऐ → महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

अ + ऐ = ऐ → धर्म + ऐक्य = धर्मैक्य

अ + ओ = औ → जल + ओक = जलौक

अ + औ = औ → जल + औषधि = जलौषधि

आ + ओ = औ → महा + ओज = महौज

आ + औ = औ → महा + औदार्य = महौदार्य

(5) गुण सन्धि: 'अ' या 'आ' के बाद लघु या दीर्घ इ, उ, ऋ आये तो दोनों के स्थान पर क्रमशः (ए), (ओ), (अरु) हो जाते हैं।

अ + इ = ए → देव + इन्द्र = देवेन्द्र

आ + इ = ए → महा + इन्द्र = महेन्द्र

अ + ई = ए → परम + ईश्वर = परमेश्वर

आ + ई = ए → महा + ईश्वर = महेश्वर

अ + उ = ओ → पर + उपकार = परोपकार

आ + उ = ओ → महा + उत्सव = महोत्सव

आ + ऊ = ओ → गंगा + ऊर्मि = गङ्गोर्मि

उ + ऋ = अरु → देव + ऋषि = देवर्षि

आ + ऋ = अरु → राजा + ऋषि = राजर्षि

(6) पूर्वरूप सन्धि: 'अ', 'ए' या 'ओ' के बाद आये तो 'अ' के स्थान पर पूर्वरूप का चिह्न "ऽ" हो जाता है।
 लोको + अयम् = लोकोऽयम्, हरे + अव = हरेऽव
 हरे + उत्त = हरेऽत्त, प्रभो + अवतृ = प्रभोऽवतृ

"अलंकार"

①

"अलंकारोति इति अलंकारः" - जो अलंकृत करे, उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार

शब्दालंकार

जहाँ शब्दों के कारण कविता में सौन्दर्य या चमत्कार आ जाता है, उसे शब्दालंकार कहते हैं।

* प्रमुखतः चार प्रकार के होते हैं।

अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति

अर्थालंकार

शब्द के स्थान पर उसके पर्याय या अर्थ के कारण जब कविता में सौन्दर्य/चमत्कार आता है तो अर्थालंकार होता है।

* अर्थालंकार की संख्या अग्रिमिच्छित है। प्रमुख निम्नलिखित हैं।

उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, आतिशयोक्ति, संदेह, आन्निमान, विरोधाभासी।

① अनुप्रास अलंकार: किसी पंक्ति के शब्दों में एक ही वर्ण एक से अधिक बार आता है।

शु: चारु-चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में।
(⇒ 'च' वर्ण का आवृत्ति)

② यमक अलंकार: एक ही शब्द बार-बार आये परन्तु प्रत्येक स्थान पर उस शब्द का अर्थ भिन्न-भिन्न हो।

शु: कनक कनक ते सौ गुनी मादकता आदिवाई।
वा खावे बौराई नर, या पाये बैराग॥
→ सोना धतूरा

③ श्लेष अलंकार: जहाँ किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ निकले।

'रहमन' पानी राखिये, बिन पानी सब सुन।

पानी गए न उबरे, मोती, मानस-धन॥

पानी का अर्थ =

के लिए कान्ति इज्जत जल

④ वक्रोक्ति: जहाँ कोई बात किसी अन्य आशय से कही जाये परन्तु श्रोता उसका भिन्न अर्थ लगाये या समझे।

को तुम हो? इत आए कहाँ?

'धनश्याम' हैं, तो कितने बसो।

राधाजी ने कृष्णजी से पूछा तुम कौन हो, यहाँ क्यों आये हो। कृष्णजी ने कहा मैं 'धनश्याम' हूँ। धनश्याम का अर्थ 'काले वस्त्र' भी होता है। राधाजी ने कहा यह मूर्ख आये हो, कही जा कर बरसो।

अर्थालंकार

① उपमा: "एक वस्तु या व्यक्ति की समानता दूसरे की जाये" ②
श्रु: राधा, राते के समान सुन्दर है।

② रूपक: जहाँ उपमेय को उपमान के रूप में दिखाया जाये, वहाँ रूपक अलंकार होता है। श्रु: मुख-चन्द्र → मुख ही चन्द्रमा है।

③ उत्प्रेक्षा: जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
{ इसमें: मानो, मानहु, मनहु, मन, जानो, जानहु, जनु, निश्चय, मेरे जान }
इव आदि उत्प्रेक्षावाचक शब्दों का प्रयोग होता है।
श्रु: इस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी।
मानहु रोष-तरंगिनी बाढ़ी।

④ अतिशयोक्ति: किसी व्यक्ति या वस्तु का बढ़ाचढ़ा कर वर्णन किया जाये, अथवा सीमा के बाहर तक की बात की जाये।
श्रु: बांधा था विष्णु को किसे इन काली जंजिरो से।
केश/बाल
मागेवाले फणियों का मुख, क्यों धरा हुआ था हीरे से।
प्रिया प्रेमिका चन्द्रमा
की मोती गरी मांग

⑤ संदेह अलंकार: किसी वस्तु को देखकर संदेह बना रहे, और निश्चय न हो सके। श्रु: सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है,
कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही सारी है।

⑥ आतिमान (भ्रम) अलंकार: जहाँ समानता के कारण किसी वस्तु में (उपमेय) अन्य वस्तु का (उपमान का) भ्रम हो जाये।

श्रु: पाँय महावर देन को नाइन बैठी आय। } ऐसी की लालिमा
पुनि-पुनि जान महावरी एड़ी मोड़ति जाय॥ } का महावर से भ्रम

⑦ विरोधाभास: जब दो विरोधी पदार्थों का संयोग एक साथ दिखाया जाय, तब विरोधाभास अलंकार होता है।

श्रु: सुलगी अनुराग की आग वहाँ, } जल और आग में
जल से भरपूर लड़ा जहाँ ॥ } विरोधाभास है।

$$16 \text{ ————— } 12 = 28$$

$$16 \text{ ————— } 12 = 28$$

$$16 \text{ ————— } 12 = 28$$

$$16 \text{ ————— } 12 = 28$$

$$15 \text{ ————— } 13 = 28$$

$$15 \text{ ————— } 13 = 28$$

रकबा - रास

घाटी / सञ्चन्द
(का, की, के)

(2)

सप्तमी आधिक्य
(में, पर)

गंगाजल — गंगा का जल
समानोद्गार — समान का उद्गार
सूर्योदय — सूर्य का उदय
निपुरारि — निपुर का अरि

कविश्रेष्ठ — कवियों में श्रेष्ठ
नराधम — नरों में अधम
पुरुषोत्तम — पुरुषों में उत्तम
आत्मनिर्भीर — आत्म पर निर्भीर

③ कर्मधारय समास : समास के पदों में उपमेय-उपमान आश्रय
विशेष्य-विशेषण का सम्बन्ध होता है।

नीलाम्बर - नीला है अम्बर जो, पीतसागर - पीत है सागर जो

* नीलोत्पल, सन्मार्ग, महात्मा, परमेश्वर, महाकाव्य, महावध, सरसगति, महर्षि, शकेतपल, नीलमनल, नराधम, चरमसीमा, नीलाकाश

④ द्विगु समास : प्रथम पद सेव्यादात्मक, उससे समूह का बोध होता है।
पंजपात - पंच पातों का संग्रह, नवरत्न - नौ रत्नों का संग्रह

* पंचारन, नवग्रह, त्रिफला, त्रिभुज, सतसई, त्रिगुणी, अष्टपदी, चतुर्वर्ग

⑤ बहुव्रीहि समास : तीसरे पद की प्रधानता होती है, अर्थात् अर्थ बिन्द होता है।

तन्मोदर - तमबाई किन्म उदर (गणेश जी)
चतुर्भुज - चार हैं भुजायें जिसकी (विष्णु भगवान)

* चन्द्रशेखर, वीणापावि, गिरिधर, सहस्रनाम, दशमुख, जलज
(अग्नि भगवान) (मो सरस्वती) (भूमी वृण) (इन्द्र देव) (लोक) (किन्मल)

⑥ द्वेय समास : "दो जोड़ा" या "दुयम्" या जिनके बीच "और" तथा "या" का विलोप हो जाता है।

राम लक्ष्मण - राम और लक्ष्मण * माता-पिता
रामकृष्ण - राम और कृष्ण स्तीत - राव
पितरौ - माता और पिता दया-कृष्ण
लवकुश - लव और कुश दाल-रोटी
हर्मार्थ - हर्म और अर्थ पाप-पुण्य
हरिहर - हरि और हरंका शास-इश
वन्द्यवर्ण - वन्द्य और वर्ण शत-दिन

②

① यदि सकार 'त' वर्ग के साथ सकार या 'च' वर्ग आए तो सकार और त वर्ग के स्थान पर क्रम से सकार और 'च' वर्ग हो जाते हैं।

सत + चयन = सचचयन

② सकार या त वर्ग + ष या ट वर्ग = 'ष' 'ट' वर्ग

रामस् + टीकते = रामट्टीकते बृहत् + टिटृभ = बृहट्टिटृभ

③ क, च, ट, त, प के पश्चात किसी वर्ण का तीसरा या चौथा वर्ण आये तो, अथवा य, र, ल, व, अथवा कोई स्वर आये तो क, च, ट, प के स्थान पर अपने ही वर्ण का तीसरा वर्ण हो जाता है।

अच + उन्त = अजन्त , वाक् + जाल = वाग्जल
 'ज' (तीसरा वर्ण) , 'ग' (तीसरा वर्ण)

④ त - द के बाद यदि ल रहें तो $t \rightarrow d$ में परिवर्तित होगा, और (न) के पश्चात (न) रहें तो न का अनुनासिक के साथ 'ल' हो जायेगा।

$$\text{उत्} + \text{लास} = \text{उल्लास}$$

(5) यदि ह्रस्व स्वर के पश्चात् इ हो तो इ के पूर्व च जुड़ जाता है।

$\text{परि} + \text{द्वेद} = \text{परिचद्वेद}$

⑥ किसी पद के अंत में 'म' आया हो और उसके बाद कोई व्यंजन वर्ण हो तो उसकी जगह अनुस्वार हो जाता है।

$$\text{गृह्म} + \text{गच्छति} = \text{गृह्गच्छति}$$

दुःखम् + प्राप्नोति = दुःखं प्राप्नोति

हरिम् + बंदे = हरिबंदे

③ विसर्ग सन्धि: विसर्ग (:) + स्वर या व्यंजन का विकार

① यदि 'ः' से पहले और बाद में 'अ' हो तो, 'ः' → 'ओ'

अ: + ञ = ओ

तेजः + असि = तेजोसि

यशः + अभिलाषी = यशोभिलाषी

(40) 3 मई 2016 बंगलुरु में आयोजित 14वें जूनियर फेडरेशन कप नेशनल एथलेटिक्स चैंपियनशिप में महिलाओं की 1500 मी 0.005 की विजेता:-
मिली दास (पश्चिम बंगाल)

(41) UEFA (Union of European Football Association) के अध्यक्ष पद से दिनांक 9 मई 2016 को त्यागपत्र दिया:- माइकल प्लातिनी ने।

(42) 13 मई 2016 को ICC क्रिकेट समिति का अध्यक्ष नियुक्त:-
अनिल कुंबले

(43) BCCI के अध्यक्ष: अनुराग ठाकुर, सांसद (22 मई 2016 को)

(44) ICC के स्वतंत्र अध्यक्ष (Independent Chairman) चुने गये: शाशांक मनोहर (12 मई 2016)

(45) FIFA की पहली महिला महासचिव निर्वाचित: फात्मा सांखा डियोफ समोटा (सैनेगल की निवासिनी)
#diwakarspecialclasses

(46) भारत- जिम्बाब्वे T-20 क्रिकेट श्रृंखला (22 जून 2016)
विजेता - भारत (2-1)
मैन ऑफ द सीरीज - वसींदर सरन

(47) टेस्ट क्रिकेट में 10,000 रन बनाने वाले इंग्लैंड के पहले बल्लेबाज - एलिस्टर कुक (इंग्लैंड के कप्तान)
* सबसे कम आयु में बनाकर सचिन तेंदुलकर का रिकार्ड भी तोड़।

(48) ग्रैंड चेस डूर टूर्नामेंट 2016 → मैग्नस कार्लसन (नार्वे के विश्व चैंपियन)
* भारत के विश्वनाथन आनंद चौथे स्थान पर रहे।

(49) अन्तराष्ट्रीय हाकी महासंघ द्वारा जूनियर पुरुष हाकी विश्व कप के लिए स्थल स्थान को चुना है:- मखनडू (उप्र) → 8-18 दिसम्बर 2016

(50) महिला जूनियर विश्व कप हाकी का आयोजन:- सेंटियागी (24 नवम्बर से 4 दिसम्बर 2016)

(51) फ्रेंच ओपन 2016 (16 मई - 5 जून) - पेरिस में खेला गया।
पुरुष एकल - नोवक जोकोविच (सर्बिया) → * एंड्री मरे (ब्रिटेन) उपविजेता
महिला एकल - मार्गेन मुगुरुजा (स्पेन) → सेरेना विलियम्स (USA) उपविजेता
मिश्रित युगल - लियोनार्ड पेस + मार्गेना हिगिस, उपविजेता → सानिया मिर्जा + रवान डोडिज

समास

(1)

① अव्ययीभाव समास: समास का पहला पद प्रधान होता है, समासिक पद अव्यय होता है।
सप्तम - अक्षिके सामने, अर्थार्थ - अर्थ के अनुसार, अथारुधि - रुधि के अनुसार
 अन्य उदाहरण → आजन्म, यथाविधि, दिनानुदिन, निर्भय, प्रत्यंग, प्रत्यक्ष, परोक्ष, आपादमस्तक, प्रत्युपकार, प्रतिदिन, यथाशक्ति, निर्भय, भरण, प्रत्यंग, बेशर्मी, बेकार, आजन्म, मनमाना, व्यर्थ, क्षामरण, यावज्जीवन

② तत्पुरुष समास: पहला पद गाँठ होता है, अंतिम पद की प्रधानता होती है।
 सामान्यतः प्रथम पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य होता है। तथा दोनों के मध्य कारक (द्वितीया-स-सम्प्रसारक) का लोप हो जाता है।

कारक / विभक्ति	समासशब्द	विग्रह
<u>द्वितीय / कर्त्ता तत्पुरुष</u> (को)	गगनचुम्बी	गगन को चूमने वाला
	माखनचोर	माखन को चुराने वाला
	मनोहर	मन को हरने वाला
	गृहागत	गृह को आगत
<u>तृतीय / करण</u> (से)	मदशून्य	मद से शून्य
	दण्डपीडित	दण्ड से पीडित
	शोकग्रस्त	शोक से ग्रस्त
	श्रमजीवी	श्रम से जीने वाला
<u>चतुर्थ / सम्प्रदान</u> (के लिए)	सभाभवन	सभा के लिए भवन
	गोशाला	गो के लिए शाला
	मालगोदाम	माल के लिए गोदाम
	लोकहितकारी	लोक के लिए हितकारी
<u>पंचमी / अपादान</u> (से मलग होना)	कलहीन	कल से हीन
	वृक्षपतित	वृक्ष से पतित
	प्रणम्युक्त	प्रण से मुक्त
	पदच्युत	पद से च्युत

"रस"

(2)

रस	स्थायी भाव
① शृंगार	रति
② हास्य	हास्य
③ करुण	शोक
④ वीर	उत्साह
⑤ रौद्र	क्रोध
⑥ भयानक	भय
⑦ वीभत्स	जुगुप्सा (घृणा)
⑧ अद्भुत	विस्मय
⑨ शान्त	निर्वेद (वैराग्य)
⑩ वात्सल्य	वत्सल
⑪ भक्ति	भक्ति

{ राम को रूप निहारति जानकी कैगन केनग की परदाही। } शृंगार रस
{ याते सबे सुख भूलि गइ कर तेकि रही पल तारति नाही॥ } (रति)

{ जेहि दिसि नारद बैठे फूली। सो दिसि तेहि न बिलोकी भूली। } हास्य रस
{ पुनि-पुनि मुनि अकसहिं अकुलाही। देखि दसा हर-गन मुसकाही॥ } (हास्य)
[नारद के वानर रूप की कल्पना करके आक्षेप किया गया है।]

{ पाँय बेहाल विषाइन सो भये, कंठक-जाल लैगे पुनि जोये। } करुण रस
{ हाय! भड़ा दुःख पाये सखा! तुम आये इत न किते दिन खोये॥ } (शोक)
(सुदामा की दयनीय दशा पर कृष्ण जी का चिन्तन)

{ अय के दृढ़-विद्वानु-युक्त थे दीपीमान जिनके मुख-मंडल। } वीर रस
{ पर्वत की भी खण्ड-खण्ड कर रजकण कर देने की चंचल॥ } (उत्साह)

{ माखे लघन, कुटिल भयी भौंटे। } रौद्र रस
{ रद-पट फरकत नैन रिसीं हैं॥ } (क्रोध)
{ कहि न सकत रघुवीर डर, लगे वचन जुनु बान। }
{ नाइ राम-पद-कमल-भुग, बोले गिरा प्रसाद॥ }

"अलंकार"

①

"अलंकारोति इति अलंकारः" - जो अलंकृत करे, उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार

शब्दालंकार

जहाँ शब्दों के कारण कविता में सौन्दर्य या चमत्कार आ जाता है, उसे शब्दालंकार कहते हैं।

* प्रमुखतः चार प्रकार के होते हैं।

अनुप्रास, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति

अर्थालंकार

शब्द के स्थान पर उसके पर्याय या अर्थ के कारण जब कविता में सौन्दर्य/चमत्कार आता है तो अर्थालंकार होता है।

* अर्थालंकार की संख्या अग्रिमिच्छित है। प्रमुख निम्नलिखित हैं।

उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, आतिशयोक्ति, संदेह, श्रान्तिमान, विरोधाभासी।

① अनुप्रास अलंकार: किसी पंक्ति के शब्दों में एक ही वर्ण एक से अधिक बार आता है।

शु: चारु-चन्द्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल थल में।
(⇒ 'च' वर्ण का आवृत्ति)

② यमक अलंकार: एक ही शब्द बार-बार आये परन्तु प्रत्येक स्थान पर उस शब्द का अर्थ भिन्न-भिन्न हो।

शु: कनक कनक ते सौ गुनी मादकता आदिवाई।
वा खावे बौराई नर, या पाये बैराग॥
→ सोना धतूरा

③ श्लेष अलंकार: जहाँ किसी शब्द के एक से अधिक अर्थ निकले।

'रहमन' पानी राखिये, बिन पानी सब सुन।

पानी गए न उबरे, मोती, मानस-धन॥

पानी का अर्थ =

के लिए कान्ति इज्जत जल

④ वक्रोक्ति: जहाँ कोई बात किसी अन्य आशय से कही जाये परन्तु श्रोता उसका भिन्न अर्थ लगाये या समझे।

को तुम हो? इत आए कहाँ?

'धनश्याम' हैं, तो कितने बरसो।

राधाजी ने कृष्णजी से पूछा तुम कौन हो, यहाँ क्यों आये हो। कृष्णजी ने कहा मैं 'धनश्याम' हूँ। धनश्याम का अर्थ 'काले वस्त्र' भी होता है। राधाजी ने कहा यह मूर्ख आये हो, कही जा कर बरसो।

"विष्ठा पूय रन्धिर कच टाडा,
वरषड कबहुं उपल बहु दौडा" } **वीरभक्त रस** (जुगुप्सा) ⁽²⁾
 (बहु कभी पिष्ठा, खून, बाल बाल छिड़िया बरसाता था,
 बाल कभी बहुत सारे फरफरे फेंकने लगता था)

"समस्त सर्पों संग श्याम ज्यों कदे
कलिन की नन्दिनी के सु-अंकसे।
खड़े किनारे जितने मनुष्य थे;
सभी महा शक्ति मीत हो उठे॥" } **अथानक रस**
 (भय)

{ आखिल भुवन घर-बचर जग हरिमुख मंलाखि मातु।
चकित भयी, गद्गद वचन, विकसित हुग पुलकातु॥ } **अद्भुत रस**
 (विस्मय)

{ समता लहि सीतल भया, मिटी मोह की ताप।
निशि-वासर सुख निधि लखा, अंतर प्रगट्या आप॥ } **शांत रस**
 (निर्वेद)

{ यशोदा हरि पालने सुलावै।
हरलावै दुतरावै जोइ-सोइ कुइ गावै॥ } **वात्सल्य रस**
 (पासल)

{ जाको हरि हृद अंग कर्यों।
सोइ सुसील, पुनीत, वेद-विद विद्या-गुनानि भर्यो॥ }
भक्ति रस (भक्ति)

(ii) यदि विसर्ग (:) के बाद क, ख, प, फ हो तो विसर्ग (:) का रूप नहीं बदलता।

रजः + कण = रजःकण, पयः + पान = पयःपान

(iii) * विसर्ग (:) + 'च', 'इ', 'श' → 'श'

कः + चित = कश्चित, दुः + शासन = दुःशासन,

निः + चल = निश्चल, निः + दल = निश्दल

(iv) विसर्ग (:) + ट, ठ, ष → 'ष'

दुः + ट = दुष्ट, नः + ट = नष्ट

(v) विसर्ग (:) से पहले 'इ' या 'उ' हो बाद में क, ख, प, या फ, तो विसर्ग (:) → ष

निः + काम = निष्काम, निः + कपट = निष्कपट, निः + पाप = निष्पाप

(vi) विसर्ग (:) के बाद त, थ, या स हो तो विसर्ग (:) → स्

मनः + ताप = मनस्ताप, निः + संदेह = निस्सन्देह

- निम्न में संधि बताये ?

- ① अत्यल्प →
- ② पावन →
- ③ दिगम्बर →
- ④ निष्पाप →
- ⑤ वनौषधि →
- ⑥ सूर्योदय →
- ⑦ अविष्कार →
- ⑧ सचचरित →
- ⑨ सप्तर्षि →
- ⑩ मनोबल →
- ⑪ तथैव →
- ⑫ गंगोदक →
- ⑬ अत्यावश्यक →
- ⑭ यशोधरा →
- ⑮ तन्मय →

निम्न में संधि विच्छेद बताये।

- ① पुनर्जन्म _____
- ② पितृण _____
- ③ युधिष्ठिर _____
- ④ सत्कर्म _____
- ⑤ तपोवन _____
- ⑥ मृत्युपरांत _____
- ⑦ उपर्युक्त _____
- ⑧ अन्वेषण _____
- ⑨ जगदीश _____
- ⑩ रामायण _____
- ⑪ इज्ज्वल _____
- ⑫ निराहार _____
- ⑬ मनोभाव _____
- ⑭ स्वागत _____
- ⑮ निर्विकार _____

(3) अयादि सन्धि: जब ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भी स्वर आये तो, (2)

$\downarrow \quad \downarrow \quad \downarrow \quad \downarrow$
 अय्य् आय्य् अव्य् आव्य्

ए + अ = अय्य् → ने + अन् = नयन्

ऐ + अ = आय्य् → नै + अक् = नायक्

ओ + अ = अव्य् → भो + अन् = भवन्

औ + अ = आव्य् → पौ + अक् = पावक्

(4) वृद्धि सन्धि: जब लघु या दीर्घ 'अ' के बाद ए, ऐ, ओ, औ आए तो
 ए → ऐ, ऐ → ओ, औ → औ हो जाते हैं।

अ + ए = ऐ → परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य

आ + ए = ऐ → तथा + एव = तथैव

आ + ऐ = ऐ → महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

अ + ऐ = ऐ → धर्म + ऐक्य = धर्मैक्य

अ + ओ = औ → जल + ओक = जलौक

अ + औ = औ → जल + औषधि = जलौषधि

आ + ओ = औ → महा + ओज = महौज

आ + औ = औ → महा + औदार्य = महौदार्य

(5) गुण सन्धि: 'अ' या 'आ' के बाद लघु या दीर्घ इ, उ, ऋ आये तो दोनों के स्थान पर क्रमशः (ए, औ, अरु) हो जाते हैं।

अ + इ = ए → देव + इन्द्र = देवेन्द्र

आ + इ = ए → महा + इन्द्र = महेन्द्र

अ + ई = ए → परम + ईश्वर = परमेश्वर

आ + ई = ए → महा + ईश्वर = महेश्वर

अ + उ = ओ → पर + उपकार = परोपकार

आ + उ = ओ → महा + उत्सव = महोत्सव

आ + ऊ = ओ → गंगा + ऊर्मि = गङ्गोर्मि

उ + ऋ = अरु → देव + ऋषि = देवर्षि

आ + ऋ = अरु → राजा + ऋषि = राजर्षि

(6) पूर्वरूप सन्धि: 'अ', 'ए' या 'ओ' के बाद आये तो 'अ' के स्थान पर पूर्वरूप का चिह्न "ऽ" हो जाता है।
 लोको + अयम् = लोकोऽयम्, हरे + अव = हरेऽव
 हरे + उत्त = हरेऽत्त, प्रभो + अवतृ = प्रभोऽवतृ

अर्थालंकार

① उपमा: "एक वस्तु या व्यक्ति की समानता दूसरे की जाये" ②
श्रु: राधा, राते के समान सुन्दर है।

② रूपक: जहाँ उपमेय को उपमान के रूप में दिखाया जाये, वहाँ रूपक अलंकार होता है। श्रु: मुख-चन्द्र → मुख ही चन्द्रमा है।

③ उत्प्रेक्षा: जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
{ इसमें: मानो, मानहु, मनहु, मन, जानो, जानहु, जनु, निश्चय, मेरे जान }
इव आदि उत्प्रेक्षावाचक शब्दों का प्रयोग होता है।
श्रु: इस कहि कुटिल भई उठि ठाढ़ी।
मानहु रोष-तरंगिनी बाढ़ी।

④ अतिशयोक्ति: किसी व्यक्ति या वस्तु का बढ़ाचढ़ा कर वर्णन किया जाये, अथवा सीमा के बाहर तक की बात की जाये।
श्रु: बांधा था विष्णु को किसे इन काली जंजिरो से।
केश/बाल
माँगे वाले फणियों का मुख, क्यों धरा हुआ था हीरे से।
प्रिया प्रेमिका चन्द्रमा
की मोती गरी माँग

⑤ संदेह अलंकार: किसी वस्तु को देखकर संदेह बना रहे, और निश्चय न हो सके। श्रु: सारी बीच नारी है, कि नारी बीच सारी है,
कि सारी ही की नारी है, कि नारी ही सारी है।

⑥ आतिमान (भ्रम) अलंकार: जहाँ समानता के कारण किसी वस्तु में (उपमेय में) अन्य वस्तु का (उपमान का) भ्रम हो जाये।

श्रु: पाँय महावर देन को नाइन बैठी आय। } ऐसी की लालिमा
पुनि-पुनि जान महावरी एड़ी मोड़ति जाय॥ } का महावर से भ्रम

⑦ विरोधाभास: जब दो विरोधी पदार्थों का संयोग एक साथ दिखाया जाय, तब विरोधाभास अलंकार होता है।

श्रु: सुलगी अनुराग की आग वहाँ, } जल और आग में
जल से भरपूर लड़ा जहाँ ॥ } विरोधाभास है।

(ii) यदि विसर्ग (:) के बाद क, ख, प, फ हो तो विसर्ग (:) का रूप नहीं बदलता।

रजः + कण = रजःकण, पयः + पान = पयःपान

(iii) * विसर्ग (:) + 'च', 'इ', 'श' → 'श'

कः + चित = कश्चित, दुः + शासन = दुःशासन,

निः + चल = निश्चल, निः + दल = निश्दल

(iv) विसर्ग (:) + ट, ठ, ष → 'ष'

दुः + ट = दुष्ट, नः + ट = नष्ट

(v) विसर्ग (:) से पहले 'इ' या 'उ' हो बाद में क, ख, प, या फ, तो विसर्ग (:) → ष

निः + काम = निष्काम, निः + कपट = निष्कपट, निः + पाप = निष्पाप

(vi) विसर्ग (:) के बाद त, थ, या स हो तो विसर्ग (:) → स्

मनः + ताप = मनस्ताप, निः + संदेह = निस्सन्देह

- निम्न में संधि बताये ?

- ① अत्यल्प →
- ② पावन →
- ③ दिगम्बर →
- ④ निष्पाप →
- ⑤ वनौषधि →
- ⑥ सूर्योदय →
- ⑦ अविष्कार →
- ⑧ सत्चरित →
- ⑨ सप्तर्षि →
- ⑩ मनोबल →
- ⑪ तथैव →
- ⑫ गंगोदक →
- ⑬ अत्यावश्यक →
- ⑭ यशोधरा →
- ⑮ तन्मय →

निम्न में संधि विच्छेद बताये।

- ① पुनर्जन्म _____
- ② पितृण _____
- ③ युधिष्ठिर _____
- ④ सत्कर्म _____
- ⑤ तपोवन _____
- ⑥ मृत्युपरांत _____
- ⑦ उपर्युक्त _____
- ⑧ अन्वेषण _____
- ⑨ जगदीश _____
- ⑩ रामायण _____
- ⑪ इज्ज्वल _____
- ⑫ निराहार _____
- ⑬ मनोभाव _____
- ⑭ स्वागत _____
- ⑮ निर्विकार _____

(3) अयादि सन्धि: जब ए, ऐ, ओ, औ के बाद कोई भी स्वर आये तो, (2)

$\downarrow$ $\downarrow$ $\downarrow$ $\downarrow$
 अय्य आय्य अव्य आव्य

ए + अ = अय्य → ने + अन = नयन

ऐ + अ = आय्य → नै + अक = नायक

ओ + अ = अव्य → भो + अन = भवन

औ + अ = आव्य → पौ + अक = पावक

(4) वृद्धि सन्धि: जब लघु या दीर्घ 'अ' के बाद ए, ऐ, ओ, औ आए तो
 ए → ऐ, ऐ → ओ, औ → औ हो जाते हैं।

अ + ए = ऐ → परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य

आ + ए = ऐ → तथा + एव = तथैव

आ + ऐ = ऐ → महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य

अ + ऐ = ऐ → धर्म + ऐक्य = धर्मैक्य

अ + ओ = औ → जल + ओक = जलौक

अ + औ = औ → जल + औषधि = जलौषधि

आ + ओ = औ → महा + ओज = महौज

आ + औ = औ → महा + औदार्य = महौदार्य

(5) गुण सन्धि: 'अ' या 'आ' के बाद लघु या दीर्घ इ, उ, ऋ आये तो दोनों के स्थान पर क्रमशः (ए), (ओ), (अरु) हो जाते हैं।

अ + इ = ए → देव + इन्द्र = देवेन्द्र

आ + इ = ए → महा + इन्द्र = महेन्द्र

अ + ई = ए → परम + ईश्वर = परमेश्वर

आ + ई = ए → महा + ईश्वर = महेश्वर

अ + उ = ओ → पर + उपकार = परोपकार

आ + उ = ओ → महा + उत्सव = महोत्सव

आ + ऊ = ओ → गंगा + ऊर्मि = गङ्गोर्मि

उ + ऋ = अरु → देव + ऋषि = देवर्षि

आ + ऋ = अरु → राजा + ऋषि = राजर्षि

(6) पूर्वरूप सन्धि: 'अ', 'ए' या 'ओ' के बाद आये तो 'अ' के स्थान पर पूर्वरूप का चिह्न "ऽ" हो जाता है।
 लोको + अयम् = लोकोऽयम्, हरे + अव = हरेऽव
 हरे + उत्त = हरेऽत्त, प्रभो + अवतृ = प्रभोऽवतृ

साग्रान्य हेन्दी

कारक

(1)

"संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध क्रिया और दूसरे शब्दों के साथ सूचित किया जाता है, वह "कारक" कहलाता है।
⇒ हिन्दी में मुख्यतः आठ कारक होते हैं जिनका विवरण निम्नवत् है:-

① कर्ता कारक: ("ने") → संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया को करने वाले का बोध हो उसे "कर्ता" कारक कहते हैं।
* गीता नृत्य कर रही है। ⇒ गीता "कर्ता कारक" परसर्ग-सहित।
* राम ने धनुष पर बाण चढ़ाया। ⇒ "राम ने" कर्ता कारक परसर्ग-सहित।

② कर्म कारक: ("को") → जिस व्यक्ति या वस्तु पर क्रिया का फल पड़े।
* रावण को राम ने मारा। कर्मकारक - रावण
* अरुण पुस्तक पढ़ता है। कर्मकारक - पुस्तक

③ करण कारक: ("से") कर्ता जिस साधन या उपकरण से क्रिया सम्पन्न करता है, उसे करण कारक कहते हैं।
* माली खुरपी से घास खोंद रहा है। (खुरपी)
* मैं रेल से आया हूँ। (रेल)

④ सम्प्रदान कारक: ("के लिए, से") - जिसके लिए क्रिया की जाय, उसका बोध कराने वाला शब्द "सम्प्रदान कारक" कहते हैं।
* बच्चों के लिए दूध लाओ। (बच्चों के लिए)
* मैं पूजा के लिए फूल लाया हूँ। (पूजा के लिए)

⑤ अपादान कारक: संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे पृथक्ता (अलग होना) का बोध हो।
[से (अलग होना)]
* अतुल ने डाल से फूल तोड़ा। (डाल से)
* पतंग बच्चे के हाथ से छूट गई। (हाथ से)

⑥ सम्बन्ध कारक: संज्ञा व सर्वनाम का रूप जिससे वाक्य में आये हुए अन्य व्यक्ति या वस्तु से उसके सम्बन्ध का बोध हो।
(का, की, के)
* यह रमेश का घर है। (रमेश का)
* यह उसकी पुस्तक है। (उस की)

होमवर्क - समास चिन्हित करे ?

(3)

- ① निर्विवाद _____
- ② तुलसीवृत्त _____
- ③ नवयुवक _____
- ④ रसोईघर _____
- ⑤ चन्द्रभाल _____
- ⑥ सुलोचना _____
- ⑦ चौराहा _____
- ⑧ गुणहीन _____
- ⑨ श्यामसुंदर _____
- ⑩ झनपट _____
- ⑪ भयभीत _____
- ⑫ नीलकंठ _____
- ⑬ रोगपीडित _____

- ⑭ प्रेमान _____
- ⑮ वीरपुस्तक _____
- ⑯ दशानन _____
- ⑰ निशाचर _____
- ⑱ नीलोत्पल _____
- ⑲ पीताम्बर _____
- ⑳ चन्द्रमौलि _____
- ㉑ राजगृह _____
- ㉒ नववधू _____
- ㉓ लोकप्रेम _____
- ㉔ राजकाज _____
- ㉕ प्रतिदिन _____